ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक

आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

इषं स्तोतृभ्य आ भर। सामवेद 971

हे ऐश्वर्यशाली परमात्मन्! स्तोताओं के लिए अन्न और धन प्रदान कर।
O the Bounteous Lord ! Bestow all kinds of food and wealth for your divotees.

वर्ष 37, अंक 14 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 17 फरवरी, 2014 से रविवार 23 फरवरी, 2014
विक्रमी सम्वत् 2070 सृष्टि सम्वत् 1960853114
दयानन्दाब्द : 189 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.orgèaryasandesh

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग से

विश्व पुस्तक मेला – 2014 (15 से 23 फरवरी) प्रगति मैदान में

वैदिक साहित्य प्रचार-प्रसार स्टाल : साहित्य प्रेमियों में भारी उत्साह

युवाओं को सत्यार्थ प्रकाश की ओर आकर्षित करने का प्रयास करें – आनन्द चौहान

प्रतिवर्ष की भांति दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग से विश्व पुस्तक मेले में स्टाल लगाया जा रहा है। जिसमें न्यूनतम मूल्यों पर वैदिक साहित्य जनमानस के लिए उपलब्ध कराया जा रहा हैं।

दिल्ली सभा के महामन्त्री विनय आर्य ने बताया कि आर्यसमाज एक ऐसा आन्दोलन है जो भारत की वैदिक संस्कृति को पुन: स्थापित करने में सतत् प्रयासरत

23 फरवरी, 2014 को होगा मेले का समापन
प्रतिदिन प्रात: 11 से रात्रि 8 बजे तक खुलेगा स्टाल
अपने इष्टमित्रों, परिवारी जनों एवं बच्चों के साथ अवश्य पहुंचें

अंग्रेजी साहित्य के हॉल में पहली बार लगाया आर्य समाज का साहित्य स्टाल

देश के बाहर लगने वाले पुस्तक मेलों में भी वैदिक साहित्य के प्रचारार्थ भागीदारी होगी आरम्भ – धर्मपाल आर्य

पुस्तक मेले में सबसे अधिक बिकने वाली पुस्तकों की सूची में शामिल हुई 'सत्यार्थ प्रकाश'

युवा वर्ग को सर्वाधिक आकर्षित कर रहा है आर्यसमाज का स्टाल

(बाएं) नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला-2014 में सभा के वैदिक साहित्य स्टाल का रिबन काटकर उद्घाटन करते श्री आनन्द चौहान जी एवं श्रीमती वीणा आर्या। साथ में हैं श्री धर्मपाल आर्य जी एवं कार्यकर्तागण। (दाएं) सभा के साहित्य प्रचार स्टाल पर पुस्तकें खरीदते महानुभाव। – शेष पृष्ठ 5 पर

वेद-स्वाध्याय

दक्षिणा देने वाले का ऊँचा स्थान

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

उच्चा दिवि दक्षिणावन्तो अस्थुर्ये अश्वदाः सह ते सूर्येण। हिरण्यदा अमृतत्वं भजन्ते वासोदाः सोम प्र तिरन्त आयुः। ऋग्वेद 10/107/2

अर्थ—*(दक्षिणावन्तः)* दान देने वाले *(दिवि उच्चा अस्थुः)* द्युलोकस्थ तारों की भाँति समाज में ऊँचा स्थान, सम्मान पाते हैं, उनकी आत्मा उच्च स्थिति को प्राप्त होती है *(ये अश्वदाः)* जो अश्वादि यान वाहनों का दान करते हैं अथवा किसी को सन्मार्ग दिखाते हैं *(ते)* वे *(सूर्येण सह)* ज्ञान का प्रकाश देने वाले परमात्मा के कृपा पात्र बनते हैं। *(हिरण्यदाः अमृतत्वं भजन्ते)* ज्ञानामृत या स्वर्णादि का दान करने वाले मोक्ष-पद या अक्षुण्ण कीर्ति को प्राप्त करते हैं। *(सोम)* हे सौम्य! *(वासोदाः)* निवास के लिये स्नान या वस्त्रादि का दान करने वाले *(आयुः प्रतिरन्त)* दीर्घायु प्राप्त करते हैं।

परमात्मा ने सूर्य, चन्द्रमा, नक्षत्र, मेघ, वायु, विद्युत् आदि को पृथिवी के ऊपर अन्तरिक्ष में स्थापित किया है। इसके दो प्रयोजन हैं। ऊपर स्थित होने के कारण इनका प्रकाश, वर्षा आदि कार्य सर्वत्र निर्बाध गति से चलता रहता है। मेघ सर्वत्र जल बरसाते हैं। सूर्य और चन्द्रमा अपनी किरणों से पृथिवी के कोने-कोने को प्रकाशित करते हैं और वायु सर्वत्र गमनागमन कर रही है। दूसरा प्रयोजन यह दिखाने के लिये है कि **उच्चा दिवि दक्षिणावन्तो अस्थुः** जो दान-दक्षिणा देते हैं, उनकी यशकीर्ति द्युलोक के समान सदा बनी रहती है। लोग उन्हें सर-माथे पर बिठा लेते हैं। मृत्यु के पश्चात् भी उन्हें प्रकाशमय लोकों की प्राप्ति होती है।

दान-दक्षिणा के भी दो प्रकार हैं। जो यज्ञादि करने-कराने वाले ऋत्विक् लोगों को दी जाती है वह दक्षिणा और अन्य लोगों को अन्न, भोजन, वस्त्र आदि वितरित किये जाते हैं वे यज्ञवेदि से बाहर के दान हैं। दोनों का फल पृथक्-पृथक् होता है। वेदज्ञ ब्राह्मणों और ऋत्विक् कर्म कराने वालों को दिये गये दान-दक्षिणादि अधिक फलदायक होते हैं क्योंकि ये लोग वेद और वेदोक्त धर्म के रक्षक हैं जिनके दिखलाये सन्मार्ग पर चलने से मनुष्य जीवन सार्थक बनता है। इन लोगों को दान देने पर क्या प्राप्त होता है इसे मन्त्र के अगले भाग में कहा है—

१. **ये अश्वदाः सह ते सूर्येण** जो अश्व-हाथी, घोड़ा या आधुनिक वाहन मोटर, कार आदि का दान धर्मप्रचार करने वालों को देते हैं अथवा किसी को सन्मार्ग दिखलाते हैं वे सूर्यलोक, ज्ञान से प्रकाशित उत्तम बुद्धिवाले परिवार में जन्म लेते हैं या सबको ज्ञान देने वाले परमात्मा को प्राप्त होते हैं क्योंकि उन्होंने धर्म-प्रचारकों को प्रचार करने के लिये वाहन दिये हैं जिनसे वे अधिक स्थानों पर जाकर यज्ञादि उत्तम कार्य और वेद प्रचार कर सकें। इस कार्य से बहुत सारे लोग लाभान्वित होंगे। इसी भाँति किसी भूले पथ वाले को दुर्व्यसनों से हटा उसे सन्मार्ग पर ले आना भी बहुत पुण्य का कार्य है और ऐसे कार्य करने वालों पर परमात्मा अपनी दयादृष्टि रखेगा ही।

२. **हिरण्यदा अमृतत्वं भजन्ते** हिरण्य, स्वर्ण, चांदी, गो, भूमि, अन्न, जल आदि की दक्षिणा और दान देने वालों को अमृत अर्थात् सतत मिलने वाला सुख प्राप्त होता है और हितकारी ज्ञान, ईश्वर भक्ति का मार्ग, योग, ध्यान, समाधि ये सब हित करने वाले हैं, इनको सिखाने वालों को अमर मोक्ष की प्राप्ति होती है। तालाब, कुआं, बावड़ी, धर्मशाला, नदियों पर पुल, सिंचाई के लिये बांध, नहर आदि बनवाने वालों को अक्षय कीर्ति प्राप्त होती है।

३. **वासोदाः प्रतिरन्त आयुः** जो लोगों के रहने के लिये भूमि, मकान, वस्त्रादि का दान करते हैं अथवा सदाचारमय जीवन कैसे बनायें इसका उपदेश करने वालों की दीर्घायु की प्राप्ति होती है।

ऋत्विक् ब्राह्मणों को इतनी दक्षिणा देनी चाहिये कि उनका योगक्षेम भली भाँति चल सके। धन के अभाव में उनका वेद-स्वाध्याय और यज्ञादि कर्म बाधित हो जाता है। राजा और श्रीमन्त लोगों का कर्त्तव्य है कि उनके बिना मांगे हुये ही स्वयं जाकर उन्हें दान-दक्षिणा से सम्मानित करें। परन्तु यह भी ध्यान रखना चाहिये कि आवश्यकता से अधिक धन ब्राह्मणों को दर्प और मोह में डाल देता है और ब्राह्मणों के मोहग्रस्त होने पर धर्म का क्षय हो प्रजा का भी विनाश होता है। (महा०अनु० ६२.१९-२०)

इस सारे सूक्त का देवता 'दक्षिणा' और 'दक्षिणा देने वाले' हैं। इसलिये आगे के मन्त्रों से कुछ सूक्तियाँ उद्धृत की जाती है—

१. उरु पन्था दक्षिणाया अदर्शि।।

ऋ० १०/१०७/१

सूर्योदय होने पर यज्ञ और यज्ञोपरान्त दक्षिणा देने का मार्ग प्रशस्त हुआ अर्थात् यज्ञ के पश्चात् दक्षिणा देनी चाहिये। बिना दक्षिणा का यज्ञ पूर्ण नहीं माना जाता।

२. अवद्यभिया बहवः पृणन्ति।।

ऋ ० १०/१०७/३

जनापवाद, निन्दा के भय से भी दान-दक्षिणा देनी चाहिये। स्नातक बनने वाले ब्रह्मचारी को आचार्य उपदेश करता है—हमारे मध्य जो उत्तम विद्वान् धर्मात्मा ब्राह्मण हो उसके समीप उपस्थित हो धर्म ज्ञान प्राप्त करना। श्रद्धा, अश्रद्धा, लज्जा, भय और प्रतिज्ञा से भी दान देना चाहिये। (तैत्तिरीय० १.११)

३. दक्षिणावान् प्रथमो हूत एति।।

ऋ ० १०/१०७/५

दान-दक्षिणा देने वाला लोगों द्वारा सर्वोच्च पद पर स्थापित किया जाता है। लोग उसे नेता, ब्रह्मा और ऋषितुल्य मान उसका सम्मान करते हैं।

४. दक्षिणां वर्म कृणुते विजानन्।।

ऋ ० १०/१०७/७

जो अश्व, सुवर्ण, रजत, गो, अन्न आदि की दक्षिणा देता है, वह दक्षिणा उसकी रक्षा करने वाले कवच के समान हो जाती है।

५. न भोजा मम्रुर्न न्यर्थमीयुः।।

ऋ ० १०/१०७/८

दूसरों को भोजन कराने वाले और रक्षा करने वाले मृत्यु और नीच गति को प्राप्त नहीं होते।

अब एक प्रश्न शेष रह जाता है कि श्रद्धापूर्वक यज्ञवेदी पर दिया गया दान और अन्यत्र दयाभाव से जो दान दिया गया है उनमें कौन सा श्रेष्ठ है। इसका उत्तर अनुशासन पर्व अ० ६१ में विस्तार से दिया है, क्योंकि यज्ञ धातु का अर्थ देना भी है। इसलिये दान देना यज्ञ ही का एक अंग है। इनमें कौन-सा श्रेष्ठ है इसके विषय में यह विचार करना चाहिये कि वर्तमान में पात्र कौन है अर्थात् किसको प्राथमिकता दी जाये। - क्रमशः

यजुर्वेद में शिव (रुद्र) का स्वरूप और कार्य

- डॉ. भवानीलाल भारतीय

वैदिक धर्म में एक परमात्मा को इन्द्र, मित्र, वरुण, सुपर्ण, अग्नि, यम तथा मातरिश्वा आदि नामों से पुकारा गया है। इसका प्रमाण ऋग्वेद 1/164/46 में मिलता है जहां कहा गया है कि एक ही सत्य (ईश्वर) को विप्र अर्थात् बुद्धिमान पुरुष विभिन्न नामों से पुकारते हैं। कालान्तर में हिन्दू धर्म में तीन देवों को प्रधान मान कर ब्रह्मा, शिव तथा विष्णु की उपासना का प्रचलन हुआ। सृष्टि के उत्पत्ति कर्त्ता प्रायः उपेक्षित ही रहे। यजुर्वेद में स्त्री को यज्ञ में, ब्रह्मा के पद पर प्रतिष्ठित करने का स्पष्ट उल्लेख मिलता है-**स्त्री हि ब्रह्मा बभूविध।**

विष्णु को संसार का पालन कर्ता बताया जाता है यद्यपि व्युत्पत्ति की दृष्टि से सर्वत्र व्यापक होने से 'विष्णु' शब्द की सिद्धि होती है। वेदों में विष्णु वाचक मंत्र थोड़े हैं। कालान्तर में जब वैष्णव मत का प्रचार हुआ तो यह भारत का प्रधान उपासक सम्प्रदाय बना। यजुर्वेद अध्याय 16 का मुख्य देवता (प्रतिपाद्य विषय) रुद्र है जो भगवान् शंकर की संहार शक्ति का द्योतक है। तथापि यजुर्वेद के इस प्रकरण में वर्णित रुद्र के स्वरूप एवं क्रियाकलाप को देखें तो यहां 'रुद्र' शासक राजा तथा सेनापति की भूमिका में आये देवता का वाचक है। तथापि रुद्र को शिव, शम्भु, मयोभव (सुख प्रदायक), शिवतर आदि वाचक शब्दों का प्रयोग इस मंत्र को परमाराध्य परमात्मा को किया गया नमस्कार का सूचक यह मंत्र है-नमः शम्भवाय च मयोभवाय च नमः शंकराय च मयस्कराय च नमः शिवाय च शिवतरायच ।। (16/41)

इस सोलहवें अध्याय में वर्णित रुद्र के राजा तथा सेनापति सूचक अर्थों के अतिरिक्त जब हम रुद्र को सृष्टि के संहारकर्ता रूप में स्मरण करते हैं, तो रुद्र के व्युत्पत्ति जन्य अर्थ की ओर हमारा ध्यान जाता है जहां दुष्टों का दमन करने वाले, उन्हें रुलाने वाले परमात्मा की रुद्र संज्ञा बताई गई। 66 मंत्रों वाले इस सोलहवें अध्याय के आरम्भ में रुद्र रूपी सेनापति या राजा के मन्यु (क्रोध) को स्मरण किया गया है जो दुष्टों को दण्ड देने की क्षमता रखता है, साथ ही उसके तीक्ष्ण बाणों तथा बलशाली भुजाओं का भी आदर पूर्वक स्मरण करता है। इस रुद्र को 'नीलग्रीव' कहा गया है। कालान्तर में जब शिव के विषपान की कथा प्रचलित हुई तो उनके कण्ठ में विद्यमान नीलिमा इसी विषपान की सूचक बनी। यह रुद्र आठवें मंत्र में 'सहस्राक्षाय' हजार आंखों वाला अथवा सर्वत्र फैले चार चक्षुओं (जासूसों) वाला कहा गया है जो अपनी सतर्कता तथा सावधानी के कारण सम्पूर्ण राज्य पर नज़र रखता है। दसवें मंत्र में रुद्र के लिए 'कपर्दी' शब्द प्रयुक्त हुआ है जो उसके जटाजूट का वाचक है शिव की अधिकांश मूर्तियों में उनकी जटाओं तथा मस्तक पर चन्द्रमा एवं गंगा की उपस्थिति दिखाई जाती है 15वां मंत्र में रुद्र परमात्मा से प्रार्थना की गई है कि वह हमारे माता-पिता, बालकों आदि की रक्षा करें।

इस अध्याय के सत्रहवें मंत्र से अन्तिम 66वें मंत्र तक रुद्र के रूप में इस सर्वत्र व्याप्त, सृष्टि के कण-कण में विद्यमान, चराचर जीव जगत में अपनी सत्ता रखने वाले रुद्र के लिए नमस्कार का प्रयोग किया गया है। यहां 'नमः' शब्द अनेकार्थ वाची है। यह नमस्कार सूचक तो है ही, साथ दुष्टों के दमन, क्षुद्रप्राणियों को उनका भोज्य पदार्थ अन्नादि देने तथा दुष्टों को दण्ड देने का सूचक भी है। वस्तुतः इन मंत्रों का अभिप्राय यह बताना है कि रुद्र रूप में परमात्मा निखिल ब्रह्माण्ड सर्वत्र विद्यमान है। रुद्र और शिव के वाचक इन यजुर्मन्त्रों का संग्रह रुद्राध्याय, या रुद्री नाम से शैव मंदिरों में सस्वर पढ़ा जाता है

-3/5 शंकर कालोनी, श्रीगंगानगर (राजस्थान)

190वें जन्मोत्सव :
फाल्गुन शुक्ल दशमी पर विशेष

वैदिक मान्यताओं के सम्पोषक
श्री महर्षि दयानन्द सरस्वती जी

महर्षि दयानन्द सरस्वती न केवल 19वीं शताब्दी के सामाजिक सुधारक थे, बल्कि वह आधुनिक प्रेरणा के स्रोत भी हैं। उनके धार्मिक एवं सामाजिक चिन्तन से भारतीय समाज को नयी रोशनी मिली। महर्षि दयानन्द प्राचीनता और आधुनिकता के मध्य सेतु थे। उन्होनें वैदिक संस्कृति की लुप्त मान्यताओं को पुनर्जाग्रत किया और सुप्त भारतीय समाज को पुन: स्पन्दित किया। स्वामी दयानन्द ने उन्नीसवीं शताब्दी में वेद एवं भारतीय सस्कृति के आधार पर समाज सुधार का प्रयास किया।

महर्षि दयानन्द वेदों के प्रबल समर्थक थे। उनका मत था कि भारत का विकास तब तक नहीं हो सकता जब तक वेदों के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान विज्ञान का समन्वय न किया जाए। यही कारण है कि उन्होंने वेद को सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ माना हैं। उन्होंने आर्य समाज के जो नियम बनाए हैं इसमें महर्षि ने लिखा है कि– ***"वेद सब सत्य विद्याओं की पुस्तक है। वेद का पढ़ना पढ़ाना और सुनना सुनाना सब आर्यों का परम धर्म है।"***

महर्षि ने वेद को ईश्वरीय ज्ञान माना है और कहा है कि वेद सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ हैं। उन्होंने वेदों से निकालकर ऐसी बातें प्रकाश में ला दीं जिन्हें आधुनिक जगत में मान्यता प्राप्त है। उन्होंने वेदों को अपौरुषेय माना है और वेदों का ज्ञान सत्य की अनुभूति का एकमात्र आधार घोषित किया है। स्वामी जी ने वेदों की नवीन तर्क सम्मत व्याख्या प्रस्तुत की तथा वेदों का हिन्दी अनुवाद भी किया है। स्वामी जी ने कहा है कि प्रत्येक हिन्दू चाहे वह उच्च जाति का हो या निम्न जाति का चाहे स्त्री हो या पुरुष वेदाध्ययन करना चाहिए। उन्होंने वेदमंत्रों द्वारा स्पष्ट किया कि परमात्मा द्वारा दिया गया ज्ञान सूर्य का प्रकाश, जलवायु का अधिकार प्रत्येक व्यक्ति को समान रूप से है। स्वामी जी के अनुसार वेद ही ऐसा ग्रंथ है जिसकी छत्र-छाया में संसार के सभी मानव सुख शान्ति प्राप्त कर सकते हैं। स्वामी दयानन्द ने "स्मी शूद्रौनाधीयाताभिति श्रुति" का खण्डन किया है। स्त्री, शूद्र एवं प्रत्येक स्त्री पुरुष वेदाध्ययन का अधिकारी है। स्वामी दयानन्द ने वेदमंत्र, "इन्दमं मन्त्रं पत्नी पठेत्" को उद्घृत करते हुए बताया है कि प्राचीन काल से नारी को वेद को पढ़ने का अधिकार प्राप्त था। इसके अतिरिक्त प्राचीन काल में स्त्रियों और पुरुषों को समान अधिकार प्राप्त था। ऋग्वेद में स्त्री को बालिका, पत्नी तथा मां बताया गया है। प्राचीन काल में महिलाएं शिक्षा सम्पन्न और सुसंस्कृत थीं। गार्गी, मैत्रेयी के रूप में विदुषी महिलाएं थीं। महिलाएं वैदिक रीति से विवाह करती थी।

महर्षि दयानन्द ने वेद को धर्म का मूल माना है और वेदाध्ययन के द्वारा ही धर्म का ज्ञान उत्तम रीति से प्राप्त किया जा सकता है। वेद एवं भारतीय संस्कृति के ग्रन्थ के साथ-साथ आधुनिक ज्ञान-विज्ञान के अध्ययन से मानव का सन्तुलित निर्माण होता है। स्वामी जी ने अपने ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश में वेदमंत्रों द्वारा जीवन में सर्वांगीण विकास किस प्रकार किया जा सकता है वह रास्ता उन्होंने बताया है।

स्वामी विरजानन्द ने गुरु दक्षिणा के समय स्वामी दयानन्द से कहा था- ***"मेरे सामने प्रतिज्ञा करो कि तुम जीवित रहोगे और उन ग्रन्थों का खण्डन करोगे जो झूठे मत मतान्तरों और सिद्धान्तों की शिक्षा देते हैं। वैदिक धर्म की पुन: प्रतिष्ठा हेतु यदि आवश्यक होगा तो जीवन का उत्सर्ग कर दोगे यही मेरी गुरु दक्षिणा है।"*** गुरु की आज्ञा का पालन करते हुए आपने जीवन भर अनार्ष एवं अन्य ग्रन्थों का खण्डन किया। वैदिक धर्म की पुन: स्थापना हेतु आर्य समाज की स्थापना की। वैदिक धर्म के प्रचारार्थ अनेक शास्त्रार्थ किए। उनकी मान्यता है कि विश्व के समस्त धार्मिक ग्रन्थों में वेद सबसे अधिक प्राचीन हैं। उनका कुरान, बाइबिल तथा पुराणों के प्रति आदरभाव नहीं है। स्वामी जी ने वेदों को ईश्वरीय अभिव्यक्ति के रूप में स्वीकार किया। उनकी मान्यता 4 ऋषियों (अग्नि, वायु, आदित्य, अंगिरा) के आधार पर वेद ईश्वरीय अभिव्यक्ति है। स्वामी दयानन्द ने ऋग्वेद यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद आदि मंत्र संहिता को वेद माना है जबकि अन्य लोग ब्राह्मण ग्रन्थों को वेद के रूप में स्वीकार करते हैं। इसके अतिरिक्त मनुस्मृति, वाल्मीकीय रामायण, विदुरनीति, महाभारत के अंश और 6 दर्शनों को हिन्दू दर्शन का अधिकारी स्वीकार किया है। स्वामी दयानन्द ने सायण, महोधर, मैक्स मूलर की कौमुदी, व्याकरण के आधार पर की गई व्याख्या को गलत बताया है तथा पतञ्जलि और पाणिनी के व्याकरण को स्वीकार किया है।

स्वामी दयानन्द ने वेदों को समस्त धार्मिक ग्रन्थों से प्राचीन स्वीकार किया है। उनके अनुसार वेद संस्कृत भाषा में अभिव्यक्त किए गए हैं। जो एक राष्ट्र की भाषा न होकर समस्त भाषाओं की जननी है। जिस प्रकार संस्कृत भाषा सबसे प्राचीन है उसी प्रकार वेद सबसे प्राचीन हैं। उनकी मान्यता थी कि वे उतने ही प्राचीन हैं जितना कि मानव। उनके अनुसार वेद ईश्वरीय ज्ञान होने से स्वत: प्रमाणित हैं क्योंकि वह अपने अधिकार के लिए स्वयं अधिकृत हैं। जबकि अन्य पुस्तकें अपने अधिकार हेतु वेदों पर निर्भर हैं। स्वामी दयानन्द ने कुरान, बाइबिल की तुलना में वेदों को अनन्त ज्ञान का भण्डार सिद्ध किया। उनका कहना है कि ईश्वर अनन्त है तो ईश्वरीय ज्ञान भी अनन्त है। स्वामी जी के अनुसार वेदों में केवल दार्शनिक तत्व ही नहीं अपितु वैज्ञानिक आविष्कारों का ज्ञान भी है। उनकी मान्यता है कि सनातन, इस्लाम तथा इसाई धर्म का प्रादुर्भाव महाभारत के बाद हुआ। उन्होंने उस युग की कल्पना भी की है कि जब भारतीय नरेशों का अफगानिस्तान, बलूचिस्तान व तिब्बत पर अधिकार था और रोम, ग्रीस, पेरु पर उनका शासन था। स्वामी दयानन्द के अनुसार वैदिक युग भारतीय इतिहास का महान युग था। इस कारण महर्षि दयानन्द ने वैदिक धर्म का समर्थन किया।

महर्षि दयानन्द वेदों के समर्थन से भारतवासियों को पौराणिक, अवतारवाद, बहुदेववाद व मूर्तिपूजा के स्थान पर निराकार एकेश्वरवाद का उपदेश दिया। उनके इस वेद के गौरव ज्ञान से भारतीयों में अपने धर्म के प्रति पुन: अनुराग उत्पन्न हुआ। स्वामी दयानन्द ने वेदमंत्रों के आधार पर गौ सहित सभी पशुओं की रक्षा का प्रावधान किया है। उन्होंने अहिंसा का समर्थन किया है। उन्होंने यजुर्वेद मंत्र- **'अघ्न्या यजमानस्य पशूनपहि'** की आज्ञा का उपदेश दिया है।

हमारे प्राचीन ग्रन्थ वेदों में विज्ञान का विशद वर्णन है। स्वामी दयानन्द के अनुसार गुरुत्वाकर्षण का नियम, खगोलशास्त्र का ज्ञान, बीजगणित और रेखागणित का ज्ञान भी वेदों में निहित है।

स्वामी दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में यजुर्वेद 3-6 का उदाहरण देते हुए कहा है कि- "सभी नक्षत्र सूर्य, चन्द्रमा, पृथ्वी, आकाश में अपनी धुरी पर घूमते हैं। वेद भाष्य भूमिका में स्वामी दयानन्द ने स्टीमरों, हवाई जहाजों तथा भाप से चलने वाली कारों का वर्णन किया है। उनके अनुसार वेदों में जल, थल तथा आकाश की सुविधाओं का प्रयोग करना आदि बातें निहित हैं। भाप यन्त्रों के लिए नौकाएं, समुद्र के लिए तथा हवाई जहाज जो अग्नि हवा तथा विद्युत से सम्बन्धित हैं उड़ने के लिए उपयुक्त हो सकते हैं। यह साधन सिल्वर, लोहा, तांबे से निर्मित किए जाएंगे।

स्वामी दयानन्द केवल धर्म से सन्तुष्ट नहीं थे बल्कि वह यूरोपीय वैज्ञानिक आविष्कारों के महत्व को भी महसूस करते थे। इसलिए वह पूर्व पश्चिम की प्राचीन व नई बातों का समन्वय पैदा करना चाहते थे तथा वेदों द्वारा भारतीयों की बौद्धिक व आध्यात्मिक सर्वोच्चता की गारन्टी देना चाहते थे। उन्होंने भारतीयों के पतन के कारण वेदाध्ययन का अभाव ही स्वीकार किया है तथा भारत वासियों को रूढ़ियुक्त होने के लिए **'वेदों की ओर चलो'** का नारा दिया।

स्वामी दयानन्द ने वेदों को समस्त धार्मिक ग्रन्थों से प्राचीन स्वीकार किया तथा उन्हें समस्त ज्ञान का भण्डार सिद्ध किया। उन्होंने ऋग्वेदभाष्य, यजुर्वेदभाष्य, ऋग्वेदभाष्य भूमिका आदि ग्रन्थ लिखकर समाज को नई दिशा प्रदान की। उन्होंने वैज्ञानिक आविष्कारों के ज्ञान को भी वेदों में निहित बताकर भारतीयों को धार्मिक ज्ञान के साथ वेदवादी धारणा से भारतवासियों में धार्मिक अंधविश्वास से मुक्त करने का महत्वपूर्ण कार्य किया तथा दूसरे देशवासियों को वेदों की महत्ता का ज्ञान हुआ जिससे इनमें स्वधर्म के प्रति स्वाभिमान भाव उत्पन्न हुए। महर्षि अरविन्द ने स्वामी दयानन्द के इस वेदवाद की प्रशंसा करते हुए लिखा है कि- ***"स्वामी दयानन्द ने ठीक ही वेदों को भारत के युगों की चट्टान समझकर पकड़ लिया और उसमें उन्होंने तारुण्य की समग्र शिक्षा एक समग्र पुरुषत्व तथा एक समग्र राष्ट्रीयता का जो दर्शन किया उस पर निर्णय करने का साहस दिखलाया वह निश्चय ही उसमें राष्ट्रीय भक्ति विद्यमान थी।"***

– डॉ. आर्येन्दु द्विवेदी

स्वामी दयानन्द ने वेदों को समस्त धार्मिक ग्रन्थों से प्राचीन स्वीकार किया है। उनके अनुसार वेद संस्कृत भाषा में अभिव्यक्त किए गए हैं। जो एक राष्ट्र की भाषा न होकर समस्त भाषाओं की जननी है। जिस प्रकार संस्कृत भाषा सबसे प्राचीन है उसी प्रकार वेद सबसे प्राचीन हैं। उनकी मान्यता थी कि वे उतने ही प्राचीन हैं जितना कि मानव। उनके अनुसार वेद ईश्वरीय ज्ञान होने से स्वत: प्रमाणित हैं क्योंकि वह अपने अधिकार के लिए स्वयं अधिकृत हैं। जबकि अन्य पुस्तकें अपने अधिकार हेतु वेदों पर निर्भर हैं। स्वामी दयानन्द ने कुरान, बाइबिल की तुलना में वेदों को अनन्त ज्ञान का भण्डार सिद्ध किया। उनका कहना है कि ईश्वर अनन्त है तो ईश्वरीय ज्ञान भी अनन्त है। स्वामी जी के अनुसार वेदों में केवल दार्शनिक तत्व ही नहीं अपितु वैज्ञानिक आविष्कारों का ज्ञान भी है। उनकी मान्यता है कि सनातन, इस्लाम तथा इसाई धर्म का प्रादुर्भाव महाभारत के बाद हुआ। उन्होंने उस युग की कल्पना भी की है कि जब भारतीय नरेशों का अफगानिस्तान, बलूचिस्तान व तिब्बत पर अधिकार था और रोम, ग्रीस, पेरु पर उनका शासन था। स्वामी दयानन्द के अनुसार वैदिक युग भारतीय इतिहास का महान युग था। इस कारण महर्षि दयानन्द ने वैदिक धर्म का समर्थन किया।

गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार का वार्षिकोत्सव समारोह

11-12-13 अप्रैल, 2014

आर्यसमाजें अपना आयोजन न रखें

इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की ओर से वार्षिकोत्सव हेतु बस यात्रा आयोजित की जाएगी। दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों से निवेदन है कि अपना कोई कार्यक्रम इन तिथियों में न रखें जिससे आप भी इस समारोह में भाग ले सकें। – ***विनय आर्य, महामन्त्री***

ऋषि बोधोत्सव एवं शिवरात्रि पर विशेष

स्वयं विषपान कर संसार को अमृत पिलाने वाले अनोखे महर्षि दयानन्द सरस्वती

महर्षि दयानन्द का शिवरात्रि से गहरा ऐतिहासिक सम्बन्ध है। शिवरात्रि के व्रत ने ही बालक मूलशंकर को सच्चे शिव अर्थात् सृष्टि के रचयिता ईश्वर की खोज करने की प्रेरणा की। घर व परिवारजनों के बीच रहकर वह अपना अभीष्ट लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकते थे। इसके लिए उन्हें ऐसे विद्वानों, आचार्यों, व्याकरणाचार्यों, योगियों, चिन्तकों, मनीषियों तथा वेदज्ञों की संगति, उनके प्रशिक्षण व मार्गदर्शन की आवश्यकता थी जो उनकी शंकाओं को समझकर उन्हें दूर कर सकें। अत: घर छोड़ने का कठिन निर्णय उन्होंने लिया। सन् 1842 ई. से स्वामी दयानन्द की बालक मूलशंकर के रूप में सच्चे शिव की खोज आरम्भ होती है। इस कार्य के लिए उनका मार्ग दर्शन करने वाला कोई नहीं है। उन्होंने अपना उद्देश्य निर्धारित कर लिया और उसको प्राप्त करने की योजना की रूपरेखा उन्हे स्वयं ही बनानी है। उनका पहला कार्य यह था कि वह परिवारजनों से दूर किसी सुरक्षित स्थान पर पहुंच जायें जहां वह निश्चिन्तता से अपने मार्ग पर आगे बढ़ सकें। अपने परिवारजनों से दूर रहकर वह ज्ञानी व योगियों की संगति से अपनी सभी शंकाओं का समाधान कर सच्चे शिव व सृष्टिकर्ता ईश्वर को जान कर मृत्यु पर विजय प्राप्त कर लें। साथ हि मुक्ति की प्राप्ति के उपायों को जान कर उसके अनुरूप साधना कर कृतकार्य हो सकें। उनके जीवन के अध्येता व अनुयायी यह भली प्रकार जानते हैं कि वह अपनी खोज में सफल रहे। उनकी खोज से वह स्वयं अकेले ही लाभान्वित नहीं हुए अपितु उससे समूचे भारतीय समाज के साथ सारा विश्व भी लाभान्वित एवं प्रभावित हुआ। 27 फरवरी, 2014 को आ रही शिवरात्रि व उससे 4 दिन पूर्व उनका जन्म दिवस है। यह दो दिन भारत व विश्व के इतिहास के दो गरिमापूर्ण एवं महनीय दिवस हैं। इनकी महत्ता इस कारण है कि सूर्यास्त से उत्पन्न अन्धकार की भांति महाभारत युद्ध के पश्चात वेद व आर्ष ज्ञान के विलुप्त होने पर भारत व विश्व के लोग नाना प्रकार के अन्धविश्वासों, पाखण्डों, कुरीतियों में फंस गये थे। लगभग 5,000 वर्ष तक वेद व आर्ष ज्ञान प्राय: विलुप्त रहा। महर्षि दयानन्द ने अपने अपूर्व तप, ज्ञान, जिजीविषा व योग बल से उस विलुप्त ज्ञान को प्राप्त किया और उसे मानव मात्र को सुलभ कराया। इस कारण वह सृष्टि के इतिहास में सर्वोपरि स्थान को प्राप्त हुए। महाभारत के पश्चात व महर्षि दयानन्द के आविर्भाव से पूर्व यह हुआ कि संसार के लोग सृष्टिकर्ता ईश्वर व जीवात्मा के सत्य स्वरूप को भूल गये थे। सर्वश्रेष्ठ मानव जीवन को पाकर भी उसका लक्ष्य प्राप्त करने के स्थान पर पहले से भी अधिक पतित होते जा रहे थे। पतन की चरम स्थिति तक पहुंच जाने की अवस्था के कारणों पर विचार कर उसके निवारणार्थ ज्ञान व विद्या प्राप्त कर दु:खों से मुक्त होकर मोक्ष व अपवर्ग प्राप्ति तक का चिन्तन करने में संसार के लोग सर्वथा असमर्थ थे। ऐसे समय में महर्षि दयानन्द का आविर्भाव हुआ और उन्होंने हर बात का समाधान किया जिससे उनके समय व बाद का सारा संसार उनका कृतज्ञ है।

शिवरात्रि के इस दिन हम आर्य समाज के मन्दिरों में जाकर वहां वेदों के विद्वानों के सान्निध्य में आत्मा, परमात्मा व सृष्टि के उपभोग से जुड़े प्रश्नों पर सारगर्भित प्रवचन व उपदेश सुनकर यथार्थ ज्ञान को प्राप्त होते हैं। प्रवचनों व अपने दैनन्दिन स्वाध्याय से मन में समुद्र की तरंगों की भांति समय-समय पर उठने वाले सत्य संकल्पों को जीवन में धारण कर ईश्वर- साक्षात्कार की स्थिति तक पहुंचने में अग्रसर व सफल हों, यही इस दिवस को मनाने की सार्थकता है। यदि इस दिन अवकाश करके केवल अन्न ग्रहण न कर उपवास रखने, शिव के काल्पनिक चित्र, मूर्ति व कथा को स्मरण कर व पौराणिक रीत्यानुसार शिव की स्तुति व आरती आदि करके शिवरात्रि व ऋषि बोध दिवस को मनाते हैं तो हम कहेगें कि हमारे ऐसे भाईयों व बहिनों को शिवरात्रि मनाना ही नहीं आता। वह अन्धकार में पड़े होने पर भी यह अनुभव ही नहीं कर पा रहे हैं कि वह अन्धकार से ग्रसित हैं। अज्ञान के अन्धकार से ग्रसित व्यक्ति को यदि अपने स्वरूप व स्थिति का यथार्थ ज्ञान न हो तो फिर उसका कल्याण होना कठिन वा असम्भव होता है। ऐसी ही कुछ स्थिति पौराणिक विधियों से शिवरात्रि मनाने वाले हमारे भाईयों की है और साथ में अन्य मतावलम्बी भी इन्हीं पौराणिक भाईयों की तरह अन्धकार से आवृत अपने पुराने संस्कारों की कमाई, प्रारब्ध को भोग कर सुख अनुभव कर रहें हैं जिससे उनका प्रारब्ध व पुण्य कर्म घट रहे हैं और आगे के लिए जमा-पूंजी- रूपी-प्रारब्ध के न बचने के कारण उनके लिए हानि, दु:ख, चिन्ता, निराशा, रोग व क्लेश आदि की स्थिति बन रही है।

लगभग 2,500 वर्ष पूर्व बौद्ध व जैन मत का प्रादुर्भाव प्राय: कुछ अन्तराल के आस पास हुआ और मूर्तिपूजा इन्हीं के द्वारा न केवल भारत में अपितु संसार भर में प्रचलित हुई। इससे पूर्व भारत वर्ष व विश्व में कहीं भी मूर्ति पूजा किये जाने के प्रमाण उपलब्ध नहीं है। वेद नाम से प्रसिद्ध चार मन्त्र संहितायें ईश्वरीय ज्ञान हैं जिनकी मान्यताओं व सिद्धान्तों से मूर्तिपूजा अर्थात् ईश्वर के स्थान पर पाषाण व धातु आदि की मूर्ति को ईश्वर मानकर पूजा करने का खण्डन होता है। यह कृत्य ऐसा ही है जैसे कि माता-पिता घर में विद्यमान हैं, उनका पुत्र उनकी अनदेखी करके उनके चित्र पर पुष्प-माला व पुष्प, फल, जल, अन्न आदि भेंट कर रहा है या उनके नाम पर पुजारियों को अन्न व धन दान दे रहा है। माता-पिता यह देख कर चिन्तित व दु:खी हो रहे हैं परन्तु वह पुत्र उनकी भावनाओं व इच्छाओं पर ध्यान नहीं दे रहा है। पुत्र की भांति ऐसी ही स्थिति मूर्तिपूजा करने वालों की है जिनसे सच्चा ईश्वर कुपित है। शिव-पूजा के सन्दर्भ में लगता है कि बौद्धों व जैनियों से प्रभावित होकर हमारे अल्पज्ञानी या अज्ञानी व कुछ-कुछ स्वार्थ से प्रेरित लोगों ने ऐतिहासिक महान पुरुष भगवान शिव की उपासना व पूजा आरम्भ की होगी। उनकी पूजा आरम्भ करने से पहले भक्तों व उपासकों को शिव-उपासना का माहात्म्य भी बताना था। इसके लिए उन्होंने शिव पुराण जैसे ग्रन्थ की रचना की। शिव पुराण ही नहीं अपितु सभी पुराणों के वर्णन अविश्वसनीय हैं जिन्हें व्यवहार में घटाकर देखने पर वह सत्य सिद्ध नहीं होते। ऐसा प्रतीत होता है कि एक ऐतिहासिक शिव हुए थे जो बहुत बड़े धर्मात्मा, योगी, व्याकरणाचार्य, आयुर्वेदाचार्य, संगीत, नृत्याचार्य एवं अनेक विद्याओं में पारंगत थे। इसका सप्रमाण वर्णन पं. युधिष्ठिर मीमांसक ने अपने प्रसिद्ध ग्रन्थ 'संस्कृत व्याकरण शास्त्र का इतिहास' में किया है। जब वैदिक धर्म का ह्रास हो चुका या हो रहा था तब नास्तिक बौद्ध व जैन मतों से रक्षा के लिए सम्भवत: समयानुसार यह पौराणिक शिव उपासना आरम्भ की गई थी। जिन लोगों ने यह पद्धति आरम्भ की वह अपने समय के बहुत बड़े तथाकथित विद्वान रहे होगें। महर्षि दयानन्द ने लिखा है कि जिस देश में कोई वृक्ष नहीं होता वहां अरण्ड के वृक्ष को ही वट-वृक्ष माना जाता है। परिस्थितियो के अनुसार ऐसा होना स्वाभाविक व व्यावहारिक होता है।

इसी प्रकार से पुराणों के निर्माण काल में वेदज्ञ विद्वानों के न रहने पर जो संस्कृत जानने वाले व ग्रन्थ रचना में समर्थ व्यक्ति थे, परन्तु जो वेदों के सिद्धान्तों से या तो अनभिज्ञ थे या फिर कुछ अज्ञान व स्वार्थ जिनमें था, उन्होंने इस प्रकार की पूजा पद्धतियां रच डालीं। प्रश्न पूछने वाले व शंका करने वाले लोग उस समय नहीं थे। जो थे, उन्होंने सत्य मार्ग पकड़ने के स्थान पर अपना नया मत या नया पुराण बना डाला और अन्यों की निन्दा व अपने मत व पुराण की स्तुति की।

- शेष पृष्ठ 6 पर

जय हो देव दयानन्द की : दयानन्द चालिसा

जय हो देव दयानन्द की, आनन्द की करुणानन्द की।
कर्षन जी घर निकला सूरज, धन्य हो गई टंकारा रज।
नाम था उसका शंकर मूल, शारीरिक सौष्ठव ज्यों फूल।

शिव रात्रि का पर्व था आया, पिता ने व्रत उपवास कराया।
बालक मूल बहुत हर्षाया, दर्शन को था जी ललचाया।
भारी भीड़ भरा था मेला, उत्सुकतावश खड़ा अकेला।

पंडित जी ने शंख बजाया, लोगों ने फल-फूल चढ़ाया।
पूजन कर सो गए नर-नारी, लेकिन जगा रात वह सारी।
देखी घटना उसने न्यारी, शोर हुआ चूहों का भारी।

चूहों ने मिल भोग लगाया, मूल, मूल को नजर न आया।
कैसा शिव करवट न लेता, रक्षा निज कर भगा न देता।
सच्चा शिव कोई और है, जो जग का शिरमौर है।

घर आ उपवास को तोड़ा, सच्चे शिव की खोज में दौड़ा।
फिर देखी घर में दुर्घटना, कहाँ गए चाचा, कहाँ गई बहिना।
अभी-अभी जो खड़े यहाँ, आखिर दोनों गए कहाँ।

कोई दैवीय शक्ति है, जो मुझको न दिखती है।
देख मूल की व्याकुलता को, हुई निराशा मात-पिता को।
करने लगे विवाह तैयारी, पल्ले बाँधो इसके नारी।

मगर मूल को चैन कहाँ था, लिए प्रश्न बेचैन यहाँ था।
चकमा देकर निकल गया वह, सिद्ध मेले में पकड़ा गया वह।
एक बार फिर से आजमाया, कामयाब अपने को पाया।

घूमे मथुरा, काशी, काबा, मिले अनेकों साधु बाबा।
माला, झोली, तिलक लगाया, लेकिन दिल को चैन न आया।
पूर्णानन्द मिले संन्यासी, प्राणायाम, योग,ी।

जमकर आसन योग लगाया, 'शुद्ध चौतन्य' बन निखरी काया।
मिली और आशा की दस्तक, हर्षित रोम-रोम व रग-रग।
गुरु विरजानन्द का पता लगाया, मथुरा में गुरुवर को पाया।

जाकरके किवाड़ खटकाया, कौन हो तुम? उत्तर था आया।
यही जानने को मैं आया, गुरु ने असली शिष्य को पाया।
जमा मैल गंगा में धोया, बीज सत्य ग्रन्थों का बोया।

चले दक्ष हो विमल दयानन्द, पूर्ण प्रकाश पाया परमानन्द।
गुरुवर को निज भेंट चढ़ाई, लौंग ले गुरु दक्षिणा बढ़ाई।
गुरुवर बहुत जोर से बोले, सुनकर चीख दयानन्द डोले।

दयानन्द ये क्या देते हो?, क्या तुम अब तक नहीं चेते हो?
मिटे अंधेरा मिथ्या ज्ञान का, खिले सवेरा सत्य ज्ञान का।
वेदों का डंका बजवा दो, सत्य ज्ञान का दिया जला दो।

मुझे चाहिये तेरा जीवन, करो समर्पित पूरा तन-मन।
दयानन्द ने शीश झुकाया, गुरु का आशीष सिर पर पाया।
वेदों का भाष्य कर डाला, सत्यार्थ प्रकाश ग्रंथ रच डाला।

ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका, व्यवहार-भानु इत्यादि पुस्तिका।
गौ-करुणानिधि, गौ वार्ता, गुरु के प्रति सच्चा आभार था।
पी-पी विष अमृत पिलवाया, सच्चे शिव का बोध कराया।

- विमलेश बंसल 'आर्या' - 329 द्वितीय तल, संत नगर, पूर्वी कैलाश, नई दिल्ली-100065

प्रथम पृष्ठ का शेष

चलचित्रों से भी हो रहा है, साहित्य, संस्कृति आर्यसमाज की शिक्षाओं का प्रचार

है। आर्य समाज की हर वर्ष इस पुस्तक में सहभागिता होती है। इस वर्ष सभा द्वारा एक स्टाल अंग्रेजी साहित्य तथा 6 स्टाल हिन्दी साहित्य के लिए बुक कराए गए। हमारा उद्देश्य वैदिक साहित्य को हजारों पाठकों तक पहुँचाने का प्रयास रहता है जिससे वे विचारों की पूंजी को ग्रहण कर लाभान्वित हो सके। हमारा लक्ष्य ऐसे व्यक्ति जो आर्य समाज महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा वैदिक साहित्य से अनजान होता है या बहुत कम जानकारी होती है। उस प्रत्येक व्यक्ति तक विश्व पुस्तक के मेले से जानकारी पहुँचाना है।

महर्षि दयानन्दकृत सत्यार्थप्रकाश मात्र 10 रुपये में जनता के लिए उपलब्ध होगा। इसके अतिरिक्त वेद हिन्दी और अंग्रेजी दोनों भाषाओं मे उपलब्ध होंगे। उन्होंने बताया कि दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा प्रतिवर्ष केवल हिन्दी साहित्य के लिए ही स्टाल बुक कराती है किन्तु इस बार अंग्रेजी साहित्य के हॉल में भी सभा द्वारा आर्यसमाज का स्टाल बुक कराया गया है। जहां हिन्दी साहित्य स्टाल हॉल न. 18 में 119 न. पर है वहीं अंग्रेजी साहित्य स्टाल हॉल नं. 10 में स्टाल नं. 27 है। स्टाल का उद्घाटन 15 फरवरी 2014 को श्री आनन्द चौहान जी ने किया। उन्होंने कहा धर्म एवं कर्त्तव्य से सम्बन्धित हर प्रश्न का उत्तर सत्यार्थ प्रकाश में है। अत: युवाओं को सत्यार्थ

- शेष पृष्ठ 8 पर

स्टाल पर कार्यकर्ताओं का उत्साहवर्धन करत श्री आनन्द चौहान जी, श्री धर्मपाल आर्य, श्रीमती वीणा आर्या, अशोक गुप्ता, ओमबीर सिंह, कंवर भान खेत्रपाल, संयोजक श्री सुखवीर सिंह आर्य, ओम प्रकाश आर्य, शालिनी आर्या, जीवनलाल आर्य, सतीश चड्ढा एवं अन्य। स्टाल के बाहर सत्यार्थ प्रकाश का प्रचार करते आर्य डॉ. ओम प्रकाश भटनागर एवं स्टाल पर पुस्तकें खरीदते महानुभाव। (ऊपर) बड़ी स्क्रीन पर सीड़ी द्वारा प्रचार।

अपनी ओर से सत्यार्थ प्रकाश पर सब्सिडी हेतु सहयोग जमा करें
'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'
खाता सं. 9100100091400900
एक्सिज बैंक, IFSC - UTIB0000223
कृपया राशि जमा कराने के बाद श्री विजय आर्य जी को मो. 9540040339 पर सूचित अवश्य करें।

सत्यार्थ प्रकाश कम कीमत पर उपलब्ध कराने में सहयोग देने वाले महानुभावों की सूची

गतांक से आगे-

6. श्री आनन्द कुमार चौहान जी 500000 (10 हजार हिन्दी सत्यार्थ प्रकाश, 7 हजार अंग्रेजी तथा 33 हजार एक स्टाल के बुकिंग सहयोग हेतु)
7. श्री आशीष तोमर, बागपत 500
8. श्री अश्विन परमार, नवसारी 5000
9. श्री नरेन्द्र भारद्वाज 6000
10. श्री के. सी. गर्ग 20000
11. आर्यसमाज रोहतास नगर 600
12. आर्यसमाज मानसरोवर पार्क 2000
13. आर्यसमाज सुन्दर विहार 11000
14. श्री योगराज भारद्वाज 500
15. आर्यसमाज विवेक विहार 5000
16. आर्यसमाज बाहर रिंग रोड 2000
17. आर्यसमाज मस्जिद मोठ 2000

- क्रमश:, आप भी अपने परिवार की ओर से, अपनी संस्था की ओर से अधिक सहयोग राशि भेजकर सत्यार्थ प्रकाश को जनसाधारण तक अधिकाधिक संख्या में पहुंचाने के लिए सहयोग दें। कृपया अपनी दान राशि नकद/चैक/बैंक ड्राफ्ट के माध्यम से **'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा'** के नाम उपरोक्त बैंक खाते में जमा कराएं। **दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा दिया गया समस्त दान आयकर अधिनियम की धारा 80जी के अन्तर्गत आयकर मुक्त है।** - *महामन्त्री*

उत्तराखण्ड त्रासदी : गुप्तकाशी में आर्यसमाज द्वारा विद्यालय एवं छात्रावास के निर्माण की तैयारी

विद्यालय एवं छात्रावास के लिए खरीदी गई भूमि पर बेचने वाले परिवार के साथ आर्यसभा के अधिकारी

गुप्तकाशी के सुप्रसिद्ध विश्वनाथ मन्दिर के महंत श्री रावल के साथ क्षेत्र में वैदिक धर्म के प्रचार हेतु चर्चा करते दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी

पतंजलि केन्द्र द्वारा चलाए जा रहे प्रकल्प में निराश्रित बच्चों के साथ सभा महामन्त्री एवं आर्य अधिकारीगण

गत दिनों उत्तराखण्ड त्रासदी से सबसे प्रभावित स्थान गुप्त काशी में आर्यसमाज की ओर से प्रस्तावित विद्यालय एवं छात्रावास के निर्माण कार्य की तैयारी के लिए तीन दिनों का दौरा किया गया। इस विभिन्न बैठकें की गई। बैठक में भाग लेते सभा महामन्त्री श्री विनय आर्य, श्री विजेन्द्र आर्य, श्री रणधीर आर्य एवं स्थानीय महानुभाव।

गुप्तकाशी (उत्तराखण्ड) में सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा अधिग्रहित किए गए विद्यालय के बच्चों के साथ श्री रणधीर आर्य एवं श्री विजेन्द्र आर्य जी

पृष्ठ 4 का शेष

विद्वानों के अनुसार ऐसा ही वर्णन सभी पुराणों में मिलता है जो यथार्थ न होकर काल्पनिक होने से अविश्वसनीय या त्याज्य है। यहां हम एक उदाहरण देना चाहते हैं। हमारे एक पौराणिक मित्र श्री चन्द्र दत्त शर्मा, फलित ज्योतिषविद्, उनके पिता श्री अमन सिंह शर्मा, माताजी, पत्नी, पुत्र हिमांशु व दो पुत्रियां लगभग 30 वर्ष पूर्व शिवरात्रि के दिन दूरदर्शन पर शिवरात्रि का कार्यक्रम देख रहे थे। श्री शर्मा शिक्षा काल में ही आर्य समाज के सम्पर्क में आये परन्तु रहे अधिकांशत: पौराणिक व कुछ थोड़े आर्यसमाजी। उनका परिवार पौराणिक व आर्य समाज के विचारों का मिश्रित रूप था। उनके पिता श्री अमन सिंह शर्मा भी प्रमुख फलित ज्योतिषविदों में थे। शिवलिंग की पूजा का दृश्य दिखाये जाने पर सब घर वालों ने हाथ जोड़ कर अपनी श्रद्धा व भक्ति का परिचय दिया परन्तु पुत्र हिमांशु ने न तो शिर ही झुकाया और न हाथ ही जोड़े। दादाजी के हाथ जोड़ने के लिए कहने पर उसने कहा - 'मैं हाथ क्यों जोड़ू, यह कोई भगवान थोड़ी है, यह तो पत्थर है।' शर्माजी ने इस घटना का पूरा विवरण बाद में मिलने पर हमें बताया। अब यह बालक बड़ा हो गया है तथा पढ़-लिख कर समृद्ध व सम्मानित जीवन व्यतीत कर रहे हैं और विचारों से प्राय: पौराणिक ही है। मूर्तिपूजा की एक शिक्षाप्रद घटना आर्य समाज के विद्वान गुजरात के प्रसिद्ध सोमनाथ मन्दिर से जोड़कर सुनाते हैं। एक बार बहुत दूर से आये एक ग्रामीण वृद्ध बन्धु ने शिवरात्रि के दिन सोमनाथ मन्दिर में पूजा-अर्चना की और बाहर न जाकर हाथ जोड़कर श्रद्धान्वित वहीं खड़ा रहा। उस दिन वहां भीड़ अधिक होने व अव्यवस्था की आंशका के कारण पुजारी द्वारा उसे डांटने पर उसने कहा कि 'वह बहुत दूर से आया है, उसे खड़ा रहने दें। शायद् भगवान उसे दर्शन दे दें।' यह सुनकर पुजारी क्रोधित होकर बोला कि 'हमें व हमारे पूवर्जों को वर्षों यहां पूजा कराते हो गये, हमें तो आज तक दर्शन दिये नहीं, तुझे क्या दर्शन देगें?' हमारा अनुमान है कि आज तक किसी मूर्तिपूजक को ईश्वर के साक्षात दर्शन या साक्षात्कार नहीं हुआ है। इसका कोई ऐतिहासिक प्रमाण उपलब्ध नहीं है। यदि किसी को ईश्वर का साक्षात्कार हुआ हो तो वह योग साधना आदि कर्मों व साधनों से ही हुआ होगा। अत: मूर्तिपूजा निरर्थक सिद्ध होती है, निरर्थक इसलिए कि इससे उपासना व पूजा का मुख्य उद्देश्य ''ईश्वर का साक्षात्कार'' पूरा नहीं होता और उपासना से जो ईश्वरीय गुण, सदाचार अर्थात् आचरण की पूर्ण पवित्रता व शुद्धता, परोपकारिता, दया, करुणा, धैर्य आदि उपासक में आने चाहिये, उसके स्थान पर बुद्धि की जड़ता-मलिनता-अपवित्रता, सत्य का चिन्तन व विचार करने में असमर्थता, सत्य को स्वीकार न करना आदि जैसे गुण-अवगुण उपासक मे आते हैं।

महर्षि दयानन्द सरस्वती घर से निकलकर योगियों, संन्यासियों, विद्वानों की खोज करते हुए तथा उन्हें जो मिलता उससे योग व उपासना के साधन सीखते हुए आगे चलकर मथुरा के प्रज्ञाचक्षु स्वामी गुरु विरजानन्द सरस्वती के अन्तेवासी शिष्य बने। लगभग 3 वर्षों में उन्होंने उनसे आर्ष व्याकरण व आर्ष ग्रन्थों का अध्ययन पूरा किया। व्याकरण पढ़कर वह वेद व इतर वैदिक आर्ष ग्रन्थों के आशय, उद्देश्य, उनमें निहित सत्य व अन्यान्य विषयों को समझने की योग्यता उन्होंने प्राप्त की। वह जान गये कि मूर्तिपूजा, अवतारवाद, विभिन्न पौराणिक व्रतोपवास आदि अनार्ष व वेदविरुद्ध कर्मानुष्ठान से किसी आध्यात्मिक लाभ या लक्ष्य की सिद्धि नहीं होती। इसके स्थान पर योग दर्शन के अनुसार साधना करने से ईश्वर का साक्षात्कार होता है। बुद्धि सूक्ष्म विषयों को ग्रहण करने में समर्थ होती है। ईश्वर, जीवात्मा व प्रकृति के अनेक रहस्यों का बोध होता है। ईश्वर साक्षात्कार की अवस्था आने पर सभी आत्मिक, मानसिक, बौद्धिक व शारीरिक क्लेशों से मुक्ति मिलती है। ध्यान व समाधि में ईश्वर के सान्निध्य से आत्मा आनन्द की अनुभूति करता है। जिस प्रकार शीतल जल से स्नान करने पर शरीर की उष्णता समाप्त होती है, इसी प्रकार समाधि में ईश्वर से संयोग होने पर सभी दुर्गुण, दुर्व्यसन और दु:ख दूर होकर आनन्द की प्राप्ति व ईश्वर के स्वरूप में एकाग्रता आती है। यही कारण है कि सृष्टि के आरम्भ से आज तक सभी ज्ञानी व योगी मनुष्य विरक्त होकर ध्यान व समाधि द्वारा ईश्वरोपासना, जिसमें स्तुति व प्रार्थना भी सम्मिलित है, करते आये हैं। क्या यह सम्भव है कि जीवन भर स्तुति, प्रार्थना व उपासना के करने से यदि उन्हें इष्ट लक्ष्य, ईश्वर साक्षात्कार, दु:खों की निवृत्ति व आनन्द की प्राप्ति, न होती तो वह ईश्वर की उपासना का उपदेश करते, विविध ग्रन्थों की रचना कर इनके पक्ष में प्रमाण देते और उपनिषद जैसे उच्च आध्यात्मिक ग्रन्थों की भी रचना करते? विवेचना से यह सिद्ध है कि समाधि सिद्ध होने पर प्राप्त होने वाले लाभों का उन्हें प्रत्यक्ष अनुभव हुआ था व समाधि की उपलब्धियां भी प्राप्त हुई थी। यही कारण है कि स्वामीजी ने गुरु विरजानन्द की कुटिया से विदा लेने पर 1 वर्ष से अधिक आगरा में निवास किया व अपनी पहली पुस्तक सन्ध्या, ईश्वरोपासना पर ही लिखी। सन्ध्या क्या है, हमारे लिए सृष्टि की रचना करने व हमें मानव जन्म देने के लिए ईश्वर के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करने के लिए की जाने वाली स्तुति, प्रार्थना व उपासना की विधि है जिसके सिद्ध होने पर ईश्वर का साक्षात्कार होता है। उन्होंने सन्ध्या में लिखा है कि ***'हे ईश्वर दयानिधे, भवत्कृपया अनेन जपोपासनादि कर्मणा धर्मार्थ काम मोक्षाणाम् सद्य: सिद्धिर्भवेन्न:।'*** यह वाक्य और किसी पर चरितार्थ हो या न हो, परन्तु महर्षि दयानन्द पर पूर्णत: चरितार्थ हुआ था। हमें प्रतीत होता है कि यहां काम से अभिप्राय: समाधि में प्राप्त होने वाले ईश्वर के आनन्द से है और मोक्ष का अर्थ पूर्ण दु:खों की निवृत्ति है। इसके साथ ही मोक्ष का अर्थ जन्म-मरण से छूटना भी है जो कि उनकी मृत्यु के पश्चात उन्हें प्राप्त हुआ होगा, ऐसा अनुमान से कह सकते हैं। सन्ध्या का वैदिक जीवन पद्धति में शीर्षस्थ स्थान है। अन्य सभी कर्तव्य व कर्मकाण्ड सन्ध्या के पूरक है। सन्ध्या विहीन मनुष्य की नास्तिक संज्ञा है।

स्वामी दयानन्द जब अपने गुरु विरजानन्द की कुटिया से निकले तो उनके सामने संसार में आर्ष ज्ञान को प्रतिष्ठित करने का महान लक्ष्य व कार्य था। इसके लिए उन्होंने आगरा में एक वर्ष से अधिक अवधि तक रहकर अपनी योजना तैयार की। उन दिनों की परिस्थितियों के अनुसार इसके लिए उन्होंने मौखिक उपदेश, वार्तालाप, विचार-विनिमय, शंका समाधान, शास्त्रार्थ व शास्त्र-चर्चा तथा ग्रन्थ लेखन को अपना साधन बनाया। आगरा से आरम्भ होकर जोधपुर में प्रचार करने व मृत्यु तक वह इन्हीं साधनों का भरपूर उपयोग करते रहे। उनके कार्यों में विरोधियों, पौराणिकों, विधर्मियों, विदेशी शासकों ने कठिनाईयां पैदा कीं। लगभग 17 बार उन्हें विष देकर उनकी जीवन लीला समाप्त करने का भी प्रयास किया गया परन्तु वह अपने जीवन की अन्तिम श्वांस तक डटे रहे और अविद्या व अज्ञान का नाश तथा विद्या की वृद्धि करने के लिए दृढ़ता से वेदों का प्रचार करते रहे। ऐसा देखा गया है कि कभी-कभी बुरे काम में भलाई या विष में से अमृत निकल आता है। महर्षि दयानन्द को शिवरात्रि की मिथ्या पूजा-उपासना से ही ईश्वर के शिव-स्वरूप को खोजने, उसे प्राप्त करने, बन्धनों व दु:खों से दूर होने की प्रेरणा व शिक्षा मिली थी। उन्होंने कालान्तर में ईश्वर के शिव अर्थात् कल्याणकारी स्वरूप को जाना तथा उसको प्राप्त करने की योग दर्शनकार महर्षि पतंजलि द्वारा निर्मित उपासना पद्धति के ग्रन्थ योग दर्शन का अभ्यास कर स्वयं ईश्वर को प्राप्त किया। संसार के कल्याण की भावना से वेद व योग दर्शन के आधार पर एक संक्षिप्त लघु आर्ष ग्रन्थ पंचमहायज्ञ विधि के नाम से प्रकाशित कराया जिसमें प्रथम सन्ध्या की विधि दी गई है। वैदिक साहित्य में ईश्वरोपासना पर लिखा गया यह ग्रन्थ अन्यतम है। सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान पं. युधिष्ठिर मीमांसक ने लिखा है कि काशी के एक सुविख्यात पौराणिक विद्वान को जब यह सन्ध्या पद्धति दी गई तो उन्होंने अनेक वर्षों से की जाने वाली अपनी सन्ध्या को छोड़ कर इसे अपना लिया। बाद में जब पता चला कि यह तो स्वामी दयानन्द ने लिखी है तो वह हैरान हुए और पण्डितजी से पूछा कि क्या स्वामीजी इतने बड़े विद्वान थे? वह तो समझते थे कि स्वामी दयानन्द कोई अल्प ज्ञानी हैं व अनधिकार मूर्तिपूजा का खण्डन करते हैं। ईश्वर प्रदत्त पूर्ण सत्य वैदिक मत पर यूरोप, एशिया, अरब आदि विश्व के सभी भागों में बसे स्त्री-पुरुषों का समान व पूरा-पूरा अधिकार है। उन्हें उनका अधिकार दिलाने तथा वेदों का महत्व बताने के लिए, अपने प्राणों का मोह त्याग कर संसार के कल्याण की भावना से प्रत्येक मानव को ईश्वर का साक्षात-दर्शन कराने के लिये वह क्रुद्ध व हिंसक विरोधियों के बीच कूद पड़े।

हम समझते हैं कि स्वामीजी वेदों को ईश्वर से उत्पन्न आदि-ज्ञान, धर्म व आचरण का मूल धर्म-ग्रन्थ सिद्ध करने में पूर्ण सफल हुए हैं। यह वेद संसार के सभी धर्म-ग्रन्थों में अपूर्व, अग्रगण्य व प्रमुख ज्ञान-कर्म-उपासना-विज्ञान के ग्रन्थ हैं। यह चार वेद ईश्वर का नित्य ज्ञान है जो सदैव एक समान रहता है। इसमें किसी प्रकार की भी अपूर्णता नहीं है। अज्ञानी मनु य उनके मिशन को समझ ही नहीं पाये तथा स्वार्थों व अविद्या से ग्रस्त शिक्षित मतावलम्बियों ने भी उनके भावों को समझने का प्रयास नहीं किया। वह सब अपने- अपने हवा-महल रूपी मत-मतान्तरों को बचाने में लगे रहे। आज संसार में तर्क, युक्ति व प्रमाण की कसौटी पर केवल वेद व उसकी मान्यतायें ही स्थिर हैं जिन्हें वेद-व्याकरण-निरूक्त-युक्ति व प्रमाणों के आधार महर्षि दयानन्द ने प्रस्तुत किया है। अत: स्वामी दयानन्द आज धर्म के सच्चे जिज्ञासुओं के यथार्थ समाधान के एकमात्र अधिकारी विद्वान के गौरवमय स्थान पर सुशोभित हैं। अन्य कोई महापुरुष या विद्वान उनकी स्थिति में नहीं है। ईश्वर सर्वव्यापक, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान, जन्म मरण से मुक्त है तथा उसका अवतार नहीं होता। न कोई उसका एकलौता पुत्र हुआ और न उसे अपने लिए किसी सन्देशवाहक की आवश्यकता पडती है। इस सम्बन्ध में जो बातें हैं, वह भोले धार्मिक लोगों में भ्रान्ति उत्पन्न करती हैं। सर्वशक्तिमान होने के कारण उसका एकमात्र पुत्र होना व अपने किसी सन्देशवाहक को भेजे जाने की मान्यतायें मिथ्या व असत्य सिद्ध होती हैं। स्तुति, प्रार्थना व उपासना एक प्रकार से यम-नियम का पालन, आसन, प्राणायाम, धारणा, ध्यान व समाधि को सिद्ध करना है जिससे उपासना की सफलता होने पर ईश्वर का साक्षात्कार होता है। इसके साथ ही स्तुति, प्रार्थना व उपासना से बुरे व पाप कर्मों का भविष्य के सन्दर्भ में क्षय होकर, मुक्ति, मोक्ष, जन्म-मरण से छुट्टी, सभी दु:खों की निवृति व ईश्वर का सान्निध्य प्राप्त होता है। उन्होंने ही ईक्वर की उपासना के फल धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष का उल्लेख कर सभी मनुष्यों को समस्त दु:खों से छुड़ाकर इसके साथ 31 नील 10 खरब 40 अरब वर्षों तक मोक्ष में रहते हुए ईश्वर के सान्निध्य व आनन्द में बिताने के साधन भी बताये। यह सब एक प्रकार से उनके द्वारा संसार के प्रत्येक मनुष्य को अमृत पान कराने के समान उनके श्रेष्ठ उपकार हैं। हम समझते हैं कि आज विश्व की जनसंख्या लगभग 7 अरब के बराबर है। अभी सृष्टि की शेष अवधि 2.34 अरब वर्ष है। इस अवधि मे हमारी गणना के अनुसार न्यूनतम 65,52,00,000 अरब लोग जन्म लेगें व मृत्यु को प्राप्त होगें। उनके द्वारा अन्वेषित-प्रदत्त कर्मफल सिद्धान्त, सत्य वैदिक धर्म के अनुसार जीवनयापन व जन्म-मरण के दु:ख से छूटकर मोक्ष प्राप्ति के उपायों को करके सभी लोग लाभान्वित व कुछ सफल भी हो सकते हैं जिसका श्रेय स्वामी दयानन्द को होगा। यही नहीं उनके द्वारा प्रचारित सिद्धान्तो से संसार को स्वर्ग भी बनाया जा सकता है। इसके लिए सारे संसार के लोगों से वेद मत को स्वीकार कराकर उसके अनुसार सर्वत्र वेदानुसार शासन व्यवस्था को व्यावहारिक रूप देना है। यह कार्य असम्भव नहीं है। यह कार्य तो ईश्वर का कार्य है। महाभारत काल तक जिस प्रकार से सारे संसार में केवल एक वैदिक मत था उसी प्रकार भविष्य में भी हो

- शेष पृष्ठ 8 पर

लाला लाजपतराय जयन्ती पर छात्राओं को स्वेटर बांटे

शेरे पंजाब लाला लाजपतराय ने राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन में अपना सर्वस्व न्यौछावर कर दिया। आज के दिन हम महान् शिक्षाविद्, स्वतंत्रता सैनानी पंजाब केसरी लाला लाजपतराय की जयन्ती के अवसर पर उनके आदर्शों को अपनाने का संकल्प करें।

उक्त विचार आर्य समाज के जिला

प्रधान अर्जुनदेव चद्डा ने राजकीय प्राथमिक विद्यालय आवासन मण्डल केशोपुरा में आयोजित कार्यक्रम में मुख्य अतिथि के रूप में व्यक्त किए। इस अवसर पर आर्यसमाज जिला सभा द्वारा विद्यालय की छात्राओं को स्वेटर, गर्म टोपे वितरित किये गये।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए आर्य समाज के जिला मंत्री कैलाश बाहेती ने कहा कि विद्यालय में आर्य समाज द्वारा समय-समय पर पाठ्य सामग्री वितरित की जायेगी।

आर्य विद्वान रामदेव शर्मा ने कहा कि हम समय निकालकर परम पिता परमात्मा के प्रति कृतज्ञता अवश्य प्रकट करें जिसने हमें यह मानव जीवन दिया।

श्री दर्शन पिपलानी ने कहा कि शीघ्र ही बच्चों की वार्षिक परीक्षाऐं होने वाली हैं। अत: सभी बच्चें मन लगाकर पढ़ाई करें।

विद्यालय के प्रधानाध्यापक व समाज सेवक प्रकाश जायसवाल ने कहा कि आर्य समाज कोटा द्वारा कई विद्यालयों में शैक्षणिक सामग्री, कुष्ठ रोगी सेवा, विकलांग सेवा, निराश्रित आदि के सेवा कार्य किये जा रहे हैं। आर्य समाज के प्रतिनिधियों को शाला परिवार की ओर प्रधानाचार्य द्वारा चिन्ह भेंट किया गया।

- कैलाश बाहेती, मन्त्री

आर्य कन्या गुरुकुल, शास्त्री नगर, लुधियाना (पंजाब)-141002,

दूरभाष : 0161-2459563

प्रवेश सूचना- 2014-15

कक्षा 6 (आयु +9 से 11) एवं कक्षा 7 (आयु +10 से 12 वर्ष) में कन्याओं के प्रवेश हेतु नियमावली व पंजीकरण पत्र (मूल्य 100/-) भरकर 30 मार्च तक कार्यालय में जमा कराएं। पंजीकरण पत्र डाक द्वारा भी प्राप्त किए जा सकते हैं। कन्याओं की लिखित प्रवेश परीक्षा 6 अप्रैल, 2014 को प्रात: 8 बजे होगी। सफल कन्याओं का साक्षात्कार एवं स्वास्थ्य परीक्षण भी उसी दिन होगा।

- सत्यानन्द मुंजाल, कुलपति

वर की आवश्यकता

आर्य कन्या, ब्राह्मण गौत्र पाराशर 25 वर्ष, 5'5'' वजन 50 किलो, रंग गोरा, सुन्दर सुशील, एम.सी.ए., एम.एन.सी. में सॉफ्टवेयर इंजीनियर (ट्रनी) कार्यरत, पिता हरियाण राज्य विभाग में लेखाधिकारी, माता बी.ए.एम.एड. घरेलू, भाई बीटेक (अन्तिम वर्ष) हेतु सुयोग्य, सुन्दर सुशील कार्य वर चाहिए। इच्छुक आर्य परिवार सम्पर्क करें -

दिनेश कुमार आर्य, फरीदाबाद शहर
मो. 09968288806, 9868884665

डॉ. जयदेव वेदालंकार राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित

भारत के राष्ट्रपति महामहिम प्रणव मुखर्जी ने १७ जनवरी मध्याह्न १२ बजे राष्ट्रपति भवन में अन्य विद्वानों के साथ आचार्य डॉ. जयदेव वेदालंकार को राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित किया।

डॉ. जयदेव वेदालंकार दर्शनशास्त्र, वैदिक साहित्य, धर्म और संस्कृति के उद्भट्ट विद्वान हैं। इन्होंने अनेक ग्रन्थों की रचना की है। जिनमें वैदिक दर्शन, उपनिषदों का तत्वज्ञान, भारतीय दर्शन, ज्ञान मीमांसा एवं तत्व मीमांसा के मौलिक सम्प्रत्यय भारतीय दर्शन का इतिहास (पांच खण्ड का) वैदिक संस्कृति और विश्व संस्कृति की खोज आदि अनेक ग्रन्थों का सृजन किया है।

डॉ. जयदेव वेदालंकार को अन्य भी अनेक राष्ट्रीय पुरस्कार पूर्व में मिले हैं। जैसे वेदरत्न पुरस्कार, (बैंगलोर कर्नाटक), वेद वेदांग पुरस्कार (नासिक महाराष्ट्र)। आर्य साहित्य पुरस्कार मुम्बई, विशेष पुरस्कार उत्तर प्रदेश संस्कृत अकादमी, वर्ष का उत्तम ग्रन्थ, आई.सी.पी.आर. नई दिल्ली और स्वामी प्रणवानन्द दर्शन पुरस्कार अखिल भारतीय दर्शन परिषद आदि अनेक संस्थानों ने पुरस्कार प्रदान किये हैं।

आचार्य जयदेव वेदालंकार, गुरुकुल कांगड़ी विश्वाविद्यालय के अनेक उच्च पदों जैसे डीन प्राच्यविद्या संकाय, प्रोफेसर एवं अध्यक्ष दर्शन विभाग और कुल सचिव आदि पदों पर प्रशासनिक कार्यों को सफलतापूर्वक निर्वहण करते रहे हैं।

यह ज्ञातव्य है कि डॉ. जयदेव का जन्म एक सामान्य किसान परिवार में हुआ था। उन्होंने अत्यधिक परिश्रम करके अपने आचार्यों का आशीर्वाद प्राप्त किया है। आप स्व. स्वाामी आत्मानन्द सरस्वती, आचार्य प्रियवत, सुखदेव विद्यावाचस्पवति और आचार्य रामनाथ वेदालंकार (इन्हें भी राष्ट्रपति पुरस्कार मिला था) आदि आचार्यों के प्रिय शिष्य रहे हैं। ये एक विनम्र स्वभाव के, व्यक्तित्व के धनी हैं। आप अनेक सामाजिक संगठनों में सेवा प्रदान करते हैं। आप एक एन.जी.ओ. के संस्थापक अध्यक्ष हैं। आपने इस ट्रस्ट के द्वारा अनेक विद्वानों एवं संस्थाओं को सम्मानित किया हैं।

आर्य महा सम्मेलन का आयोजन

आर्य प्रतिनिधि सभा उत्तराखण्ड द्वारा 29-30 मार्च, 2014 को सामुदायिक केन्द्र सै. -1, बी.एच.ई.एल. रानीपुर हरिद्वार मे आर्य महासम्मेलन आयोजित किया जा रहा है जिसमें भारत के अनेक विद्वान एवं आर्य भजनोपदेशकों को आमन्त्रित किया गया है। आप सब अधिक से अधिक संख्या में पधारकर समारोह को सफल बनाएं।

- दिनेश कुमार आर्य, मन्त्री

निर्वाचन समाचार

नगर आर्यसमाज शाहदरा
मो. महाराम डूंगर, दिल्ली-32

प्रधान : श्री रणवीर सिंह आर्य
व. उप प्रधान : श्री यशोवीर आर्य
मन्त्री : श्री राजीव कोहली
कोषाध्यक्ष : श्रीमती दीप्ति

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पंजी.) में

गुरुकुल कांगड़ी फार्मेसी के उत्पाद उपलब्ध

1. आंवला कैंडी 500 ग्राम	160/-	9. सफेद सुरमा 1/2 ग्राम	32/-
(सूखा मुरब्बा) 1 किलो	286/-	10. महाभृंगराज तेल 250ग्राम	206/-
2. च्यवनप्राश स्पेशल 1 किलो	294/-	11. आंवला रस 1 लीटर	154/-
3. गुरुकुल चाय 400 ग्राम	201/-	12. मधुमेहनाशिनी 50 ग्रा.	259/-
4. गुरुकुल चाय 200 ग्राम	111/-		
5. गुरुकुल चाय 100 ग्राम	61/-		
6. गुलकन्द 250 ग्राम	114/-		
7. पायोकिल मंजन 60 ग्राम	88/-		
8. पायोकिल मंजन 25 ग्राम	42/-		

सभी उपलब्ध उत्पादों पर 10% की आकर्षक छूट। प्राप्त करने/अधिक जानकारी के लिए 9540040339 पर श्री विजय आर्य जी से सम्पर्क करें।

- महामन्त्री

शोक समाचार

श्रीमती भंवरादेवी का निधन

परोपकारिणी सभा के मन्त्री श्री ओममुनि जी की माताजी श्रीमती भंवरादेवी का दिनांक 26 जनवरी, 2014 को ब्यावर में निधन हो गया। उनका अन्त्येष्टि संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्मा को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 17 फरवरी, 2014 से रविवार 23 फरवरी, 2014

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2012–13–14

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 20/21 फरवरी, 2014

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2012–14

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 19 फरवरी, 2014

प्रतिष्ठा में,

१) इस आर्य परिवारों के मिलन पर्व पर आप अपने परिवार के छोटे से छोटे सदस्य एवं बुजुर्गों सहित सम्मिलित होकर एक वृहद् परिवार का रूप देवें।

२) यदि आप किन्हीं ऐसे आर्य परिवारों के विषय में जानते हो जो किन्हीं कारणों से वर्तमान में आर्यसमाज के संगठन से सक्रिय सम्बंध न रख पाए हों तो कृपया इस कार्यक्रम का उन्हें निमन्त्रण अवश्य दें अथवा उनका नाम-पता सभा को सूचित करें जिससे सभा उनको इस समारोह में भाग लेने के लिए आमन्त्रित कर सके। आप उनके नाम एवं पते दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के ई-मेल aryasabha@yahoo.com पर भी भेज सकते हैं।

सभी आर्यजन दिन एवं समय नोट कर लें तथा सपरिवार एवं इष्ट मित्रों सहित हजारों की संख्या में पहुंचकर समारोह को सफल बनाएं।

निवेदक

ब्र० राजसिंह आर्य	धर्मपाल आर्य	विनय आर्य	अनिल तनेजा
प्रधान	वरिष्ठ उप प्रधान	महामन्त्री	कोषाध्यक्ष
9350077858	9810061763	9958174441	9873558465

उप प्रधान : ओम प्रकाश आर्य एवं शिवकुमार मदान।

मन्त्री : अरुण प्रकाश वर्मा, शिव शंकर गुप्ता, सुरेन्द्र आर्य, सुरेश चन्द्र गुप्ता, सुखवीर सिंह आर्य,एवं जितेन्द्र भाटिया।

पृष्ठ 5 का शेष

प्रकाश की ओर आकर्षित करने का प्रयास करें। श्री धर्मपाल आर्य जी ने कहा कि देश के बाहर विदेशों में लगने वाले पुस्तक मेलों में भी सभा की ओर से वैदिक साहित्य के प्रचारार्थ भागीदारी की जाएगी।

उन्होंने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने जिन ग्रन्थों को आर्ष कहा है वे सब आर्य समाज की साहित्यिक धरोहर है इस साहित्य की उपयोगिता एवं महत्व के विषय में आज युवा पीढ़ी को जानना चाहिए।

इस विश्व पुस्तक मेले में आर्य समाज के स्वर्णिम सूत्र जैसे पत्रक नि:शुल्क भी वितरित किये जा रहे हैं।

अत: सभी पाठकों से निवेदन है विश्व पुस्तक मेले के अवसर पर आर्य समाज व वैदिक साहित्य का विशेष लाभ उठाए। स्वयं तो पुस्तक मेले में जाएं ही साथ ही अपने इष्टमित्रों को भी जाने के लिए प्रेरित करें।

पृष्ठ 6 का शेष

सकता है। हमें बस अपने कर्तव्य व दायित्व को जानकर उसका निष्ठा से पालन करना है। महर्षि दयानन्द इस कार्य के लिए शैक्षिक व वैचारिक आधार तैयार कर गये हैं। देखना यह है कि यह सृष्टि की शेष अवधि 2.34 अरब वर्षो में कब पूरा होता है। यदि यह कार्य पूरा होगा तो मनुष्यों व जीवात्माओं के लिए जन्म-जन्मान्तरों तक दु:खों से निवृत्ति व मोक्ष का मार्ग खुलेगा। यदि किसी कारण से नहीं होता तो वर्तमान में वह मार्ग बन्द तो है ही, आगे भी बन्द रहेगा। महर्षि दयानन्द को उनके बोध दिवस व शिवरात्रि पर हमारी यह शब्दमय श्रद्धांजलि प्रस्तुत हैं। हम उनके स्वप्नों के साकार होने की ईश्वर से प्रार्थना करते हैं। ईश्वर उपासकों की पुरुषार्थ से पूर्ण सच्ची प्रार्थनायें स्वीकार करता है, शायद यह प्रार्थना भी कर ले।

– मनमोहन कुमार आर्य
196 चुक्खूवाला-2
देहरादून-248001 उत्तराखण्ड

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टैलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : ब्र0 राजसिंह आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर